Indian Streams Research Journal
Vol -2 , ISSUE –7, Aug.2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

'बाणभट्ट की आत्मकथा' मे निपूनिका के चरित्र के व्दारा नारी मुक्ति की आकांक्षा

कल्पना मा. व्हसाले

हिन्दी विभाग प्रमुख, स्वा.रा.ती. महाविद्यालय,

अंबाजोगाई जि. बीड

प्रास्ताविक-

इस उपन्यास में मुख्य कथा सुत्र एक अपहरण की गयी नारी को मुक्त करके उसके पिता को पुन: सौंपना है । इस बात को बाण तथा निपुणिका के कार्यकालाप के व्दारा समझाया गया है । तथा नारी समस्या की गहराई तक पहूँचकर उसकी मुक्ति की आकांक्षा की बात लेखक ने बडी समझदारीसे की है । निपुनिका के माध्यमसे विधवा विवाह की समस्या को उभारा गया है, निपुणिका विवाह के एक वर्ष उपरान्त ही विधवा हो जाती है । उसके घरका वातावरण विधवा विवाह के अनुकुल था, नाही समाज में उसका प्रचलन था । जिससे वह दुबारा जीवन में निश्चितता की खोजकर सकती । विवश होकर उसे घरसे भागना पडता है । वह अपनी समस्या को स्पष्ट करते हुए बाणसे कहती है "मेरी शपथ लेकर तूम सत्य सत्य कहो, मेरा कौनसा ऐसा पाप चरित्र है जिसके कारण मै विदारुण दु:ख की भट्टी मे आजीवन जलती रही ?" यह एक कटु सत्य है, विशेष रुप में यदि एक स्त्री विधवा हो और घरसे भागी हो, तो उसे समाज कदाचित उसका वास्तविक स्थान देनेके लिए तैयार होता हो । समाज की यह हरधर्मी या उसकी सीमाएँ ही नारियों कि वास्तविक दुर्गति का कारण है । न वह उन्हें स्वतंत्रता दे सकता है, न सम्मानपूर्ण ढंग से जीवन जीने का अवसर ही । ऐसी शोचनीय स्थिति में नारी स्वभावत: पतित एवं लान्छित समझी जाने लगती है । बाण के व्दारा यह स्पष्ट हुआ है, "साधारणत: जीन स्त्रियों को चंचल और कुल भ्रष्टा माना जाता है, उनमें एक दैवी शक्ति भी होती है, यह बात लोग भूल जाते है, मै नही भूलता मै स्त्री शरीर को देव मंदीर के समान पवित्र मानता हूँ । उस पर की गई अनुकूल टीकाओं को मै सहन नही कर सकता ।" निश्चित इसमें अच्छे दृष्टिकोन एवं पवित्रता का आग्रह किया है और कहा है कि, हम पूर्वप्रश्चलित मान्यताओं के आधारपर नारीयों के सम्बन्ध में यादि कोई धारणा निश्चित कर लेगें, तो वह रुढ ही होगी । हमें केवल बाहय परिस्थितीयों पर ही नही, आन्तरिक स्थितियों की यथार्थता को भी समझना होगा ।

आत्मकथा में निपूनिका, भाईनी, सुचरिता महामाया आदि सभी स्त्रियों विचित्र विडम्बनाओं की शिकार है, और उनके दारुण जीवन विभिन्न नारी समस्याओं को स्पष्ट करता है । उनका अपहरण तथा शोषण नितान्त सामान्य बात है उनकी अपनी गरिआ, मर्यादा समाज में कोई स्थान नही रखती और न उन्हे महत्व ही दिया जाता है । महामाया कहती है, मै तूम्हारें देश की लाख लाख अपमानित लांछिल और अकारण दण्डित बेटियों में से एक हूँ । कौन नही जानता कि इस घृनित

व्यवसाय के प्रधान आश्रय सामन्तों और राजाओं के अन्त:पूर है ? आपमें से किसे नही मालूम की राजाधिराज की चारधारणियाँ और करंकवाहिनियाँ इसी प्रकार भगाई हुई और खरीदी हूई कन्याएँ है। माहामाया एक अन्य स्थानपर कहती है, "इस उत्तरापथ में लाख-लाख निरिही बहुओं और बेटियों के अपहरण और विक्रय का व्यवसाय क्या नही चल रहा है ? अगर देवपुत्र तुपर मिलिंद का ह्दय थोडा भी संवेदनशील होता, तो आजसे बहूत पहेले उन्हे मूर्च्छित होकर गिर पडना था। क्या राजा और सेनापति की बेटीयों का खो जाना ही संसार की दुर्घटनाऐं है ? इस भयानक स्थिति को निपूनिका और अधिक गहरा करती हुई निपूणिका कहती है।" आर्यावती के समाज के मूल में घुन लग गया है, असे महानाश से कोई नही बचा सकता .... क्या स्त्री होना ही मेरे सारे अनर्थोंकी जड नही है ? तुम इस छोटे सत्य के साथ राष्ट्र जीवन के बडे सत्य को अविरोधी पा रहे हो ? क्या बृहतर सत्य के नामपर मिथ्या का ताण्डव नही चल रहा है ? कैसे आशा करते हो आर्य कि देवपूत्र का प्रबल भुजदण्ड इस समाज को नाश के गर्त से बचा लेगा ? बाण को केवल भट्टिणी या निपुणिका को शरण देने में संतोष नही होता क्योंकि एक दो के उध्दार से यह ज्वलन्त नारी समस्या हल भी नही हो सकती उसका यह सोचना सत्य हे कि, "मैने एक भट्टिणी का उध्दार किया है सही, पर मुझे क्या मालूम है कि इस अन्त:पूर मे और कितनी भट्टिणीयाँ है। और ऐसे अन्त:पूरों की सार्थकता अधिक है, भट्टिणी और सुचिरता की सार्थकता भागवत धर्म की सार्थकतासे अधिक है मानवीयता की दृष्टिसे कम है। इस प्रकार गुढ और आहात प्रेम को लेखकने प्रस्तूत किया है। बाण के सन्दर्भ में प्रेम आत्मोन्नति का प्रतिक बन जाता है और उसका आत्मविसर्जन कही खटकने वाला प्रतित नही होता।"

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि -

तत्कालीन सांस्कृतिक, सामाजिक स्थितियों का वर्णन करते समय लेखकने राजआत्म, अन्तपूर, राजदरबार राजमार्ग, हारबाजार, बौध्दविहार, उद्यान नारी की स्थिति आदि सभी का उपयोग किया है।

शुरुवात मे ही राजमार्गपर निकलनेवाले जुलूस का चित्रण करके लेखकने समाज का एक छोटा दृष्य हमारे सामने खडा किया है।

निपूणिका की आत्मकथासे यह स्पष्ट होता है कि उस समय समाज में पूनर्विवाह की प्रथा नही थी। अन्तजार्तीय विवाह भी हर्षकाल में प्रचलित नही था। अगर अर्न्तजातीय विवाह होते भी तो लेकिन उन्हें उच्च नही समझा जाता था। भाईनी के इस कथन से उस समय की समाज व्यवस्था स्पष्ट होती है, आर्यार्न्त के समान विचित्र समाजव्यवस्था मैने कही नही देखी है। यहाँ इतना स्तर भेद है कि मुझे आश्चर्य होता है कि लोग यहाँ कैसे जीते है। ..... यही देखो तूम यदि किसी यवन कन्यासे विवाह करो तो इस देश में एक भयंकर सामाजिक विद्रोह माना जायेगा।

आत्मकथा में अनेक उत्सवो का भी वर्णन मिलता है। पुत्र उत्सव को बडे धूम-धामसे मनाया जाने का दृष्य कुमार कृष्ण बंधन के यहाँ हुए पुत्रोत्सव देखा जा सकता है। मदनोत्सव के दिन कुमारियाहें उत्सव में भाग लेती थी। इस दिन नगर की समस्त कुमारियाँ मदन की पूजा कर वरदान में अपनी इच्छा के अनुसार वर माँगती थी। प्रतिवर्ष मदनोत्सव के दिन सरस्वती मन्दिर पर समाज बैठता था। गणिकाओं के नृत्य होते थे। राज्य की ओर से इन उत्सवों को सफल बनाने का भरसक प्रयास।

राज्य की ओर से सामान्य जनता के मनोरंजन के लिए गणिकाओं के नृत्य एवं संगीतका आयोजन किया जाता था। इसके शीवाय द्यूत क्रिडा, अन्त्यक्षरी, मानसी, प्रहेलिका, विणावादन, अक्षरच्युतक और पदव्याख्या आदिसे मनोरंजन करते थे।

अस समय लोक बहुत सहज थे। बाह्मण एक उत्तरियआँ धोती का उपयोग करते थे। तांत्रिक लोग एक घुपटसे अपने शसरीर को ढक लेते थे। बौध्द भिक्षु पीले रंग का चीवर धारण करते थे। स्त्रिया साधारण श्वेत रंग के वस्त्रों का अधिक उपयोग करती थी। निपूनिका और भट्टिनी में भी य प्रवृत्ति दिखाई देती है। नगर की गणिकाऐं सुंदर वस्त्र और आभूषणों का प्रयोग करती थी। चीनांशुक जैसे कीमती वस्त्र उन्हे प्रिय थे। नुपुर रत्नावली, कानों मे कुण्डल, ललाटपर लालमणि आदि का प्रयोग गणिकाऐं करती थी। राजामहाराजा हीरे, जवाहरात, स्वर्ण आदि के अलंगारों का प्रयोग करते थे। राजा राजसभा में अमृतकेनके समान शुभ्र वर्ण के दो दुकुल धारण करता था। अन्त:पूर में नियुक्त सेवक लम्बे लम्बे कंचुक धारण करते थे।

उस समयका समाज अत्यन्त संस्कृत था। स्त्री पुरुष को कमश: देवी और आर्य सम्बोधित किया जाता था। राजा धर्माथायों के साथ बडा सम्मान का व्यवहार करते थे।

उस समय स्त्रियों को ख्रीदने बेचने का कारोबार प्रचलित था। विदुषको और लम्पटों के अनेक अड्डे हुआ करते थे जहॉ स्त्रियों को मदिरा बेचनेका काम आसानी से मिल जाता था। अन्त:पूर मे स्त्रियों की संख्या अनगिनत हुआ करती थी। महामाया का यह कथन स्त्रियों कि किर्ती को स्पष्ट करता है। "इस उत्तरापथ में लाख्र लाख्र निरिह बहुओं और बेटियों के अपहरण और विक्रय का व्यवसाय कहा नही चल रहा है। अगर देवपुत्र तुपरमिलिन्द का ह्दय थोडा भी संवेदनशील होता तो आज से बहूत पहले उन्हें मूर्च्छित होकर गिर पडणा था। क्या निरिह प्रजा की बेटियाँ उनकी नयनतारा हुआ करती ? क्या राजा सेनापति की बेटियों का ख्रो जाना ही संसार की दुघटनाऐ है ? "

बाणभट्ट की आत्मकथा में ले ख्रकने हर्षकालीन धार्मीक स्थिती को उपस्थित करने के लिए अनेक प्रसंगो को प्रस्तूत किया है। ऐसे स्थलों का भी वर्णन है जिनके माध्यम से प्रचलित धर्म, दर्शन और सम्प्रदायों की व्याख्या की है। वैष्णवधर्म शैवधर्म, शैवमत, बौध्दधर्म के तीन रुप उभरकर आये है। वैष्णव धर्म सामाजिको का धर्म है जिसके कारण वे आचरण पवित्रता और अवतार आदि के आस्था रखते है। किन्तु धानि भी नारी की तुच्छ ही माना है। यह विश्वलाने का प्रयास लेख्रकने किया है।

संदर्भ ग्रंथ -

१) साठोत्तरी हिंदी उपन्यास में नारी / किरनवाला आतेडा

२) समाज : एक परिचायक विश्लेषण / मैकाइवर पेज

३) नारी शोषण : आइने और आयाम / आशावानी व्होरा
४) भारतीय समाज और संस्कृति / कैलाशनाथ शर्मा